सादर प्रकाशनार्थ

व्यक्ति स्वस्थ तो पर्यावरण स्वस्थ

- मुनि जयंत कुमार

आज पूरे विश्व में पर्यावरण की चर्चा हो रही है, उस पर चिंता व्यक्त की जा रही है। इसके बावजूद पर्यावरण में कोई सुधार हो रहा है, ऐसा प्रतीत नहीं होता। इतनी चर्चा, इतनी कॉन्फ्रेसेज, इतनी शिखर वार्ताएं की जा रही है। इतना भारी भरकम बजट भी कोई सुधार नहीं ला रहा है। आगे भी कोई सुधार होगा, इसकी सम्भावना दिखाई नहीं देती।

समस्या का मूल कहाँ है? हमारी दिक्कत यह है कि हम केवल समस्या को देखते हैं, उसके उत्स को नहीं देखते कि उसका स्रोत कहाँ है। हमारी स्थूल दृष्टि है। वह सुक्ष्म तक नहीं जाती। प्रश्न यह है कि पर्यावरण बिगाड़ता कौन है? पर्यारण बिगाड़ता है आदमी। जब तक पर्यावरण को बिगाड़ने वाले आदमी के भीतर का पर्यावरण स्वस्थ नहीं होगा, तब तक बाहर का पर्यारण अच्छा नहीं होगा। जंगलों की कटाई किसने की? वन्य जीवों का सफाया किसने किया? खनन प्रक्रिया से धरती का अन्धाधुंध दोहन किसने किया? प्लास्टिक के कचरे को किसने फैलाया? बिना सोचे समझे नदियों का प्रवाह रोक कर बाँधों का निर्माण किसने किया? धरती को जलमग्न या बंजर किसने बनाया? विषैली गैसों का निर्माण किसने किया? प्राकृतिक जैव खादों की बजाय कृत्रिम फर्टिलाईज्ड (रासायनिक खाद) का आविष्कार और उपयोग किसने किया? परमाणु बम, हाईड्रोजन बम और उद्‌जन बम किसने बनाए? ये सब आदमी की ही तो देन है। अब प्रकृति असहयोग कर रही है तो उसका क्या दोष?

जंगलों की अंधाधुंध कटाई के बाद अब कह रहे हैं कि जंगल लगाए जाने चाहिए। यह ध्यान नहीं है कि विनाश करना आसान है, निर्माण करना कठिन है। एक बड़े पेड़ को काटने में कितना समय लगता है? घंटा, दो घंटा, लेकिन उसी पेड़ को तैयार करने में कितना समय लगता है? पच्चासों वर्ष। एक भरी पूरी बस्ती को उजाड़ने में, ध्वंस करने में ५-७ मिनट से ज्यादा नहीं लगता, किन्तु उस बस्ती को बसाने में अनेक वर्ष लग जायेगें। आदमी इस बात को समझ कर भी नहीं समझ पा रहा है।

आदमी की यह अजीब सी प्रकृति है कि वह पहले अपने लिए समस्या पैदा करता है, फिर उसके समाधान का उपाय खोजता है। समस्या पैदा करने के पीछे मुख्य कारण है धन के प्रति बढ़ती जा रही उसकी लालसा। पर्यावरण विनाश के पीछे भप उसकी लोभ वृत्ति ही काम कर रही है। पेड़ कटने से लकड़ी मंहगी से मंहगी होती गई। वृक्षों की कटाई कानूनन जुर्म घोषित होने के बाद भी कटाई का सिलसिला रूका नहीं। इमारती लकड़ी के बढ़ते मूल्यों ने इस व्यापार को बहुत बढ़ावा दिया। कीमती लकड़ी एक राज्य से दूसरे राज्य में अवैध तरीके से भेजी जाने लगी। माफिया गिरोहों ने इस अवैध व्यापार में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई। हमारे देश में रिश्वत का बाजार इतना गर्म है कि खतरनाक हथियार मनचाही जगह पर भेजे जा सकते हैं। जेल का खौफ अब किसी को नहीं रहै। जेल अब अपराधी के लिए सुरक्षित शरणस्थली है।

पर्यावरण दुषित हो रहा है, इस पर हमारा ध्यान है, पर इस समस्या को पैदा करने वाले पर ध्यान नहीं जा रहा है। अगर हम केवल पर्यावरण की समस्या पर ही अटके रह गए तो पर्यावरण सुधार के लिए किया जाने वाला हर प्रयत्न बेकार सिद्ध होगा। पर्यावरण खराब क्यों हो रहा है? प्रदुषित क्यों हो रहा है? उस पर विचार आवश्यक है, सुधार जरूरी है।

बड़ी अजीब बात है कि जो राष्ट्र अधिकाधिक उत्पादन के लोभ में पर्यावरण को खराब कर रहे हैं वे ही पर्यावरण की समस्या को लेकर ज्यादा शोर मचा रहे हैं। भारत में आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए उत्पादन पर बहुत जोर दिया जा रहा है। हर राज्य अपने यहाँ पुंजी निवेश के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को आमंत्रित कर रहा है। उनकी हर शर्तें स्वीकार की जा रही है। एक प्रतिस्पर्धा सी चल रही है कि कौन अपने यहाँ ज्यादा से ज्यादा उद्योग-धंधे लगाने में आगे रहता है? इस प्रतिस्पर्दा में पर्यावरण को पूरी तरह से गौण किया जा रहा है।